Hindi Version

भाकृअनुप -केंद्रीय जूट एवं संबद्ध रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

रेशा फसलों के लिए कृषि-सलाह – जून 2026

जूट/ पटसन, मेस्ता, रेमी, सिसल और सनई

पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, ओडिशा और उत्तर प्रदेश के मौसम का हाल

- दक्षिण-पश्चिम मानसून पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत में समय से पहले आने की संभावना है।
- पश्चिम बंगाल, असम और ओडिशा में मध्यम से भारी बारिश की उम्मीद है।
- उच्च आर्द्रता (75-90%) और तापमान 28-36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना।
- निचले इलाकों में अस्थायी जलभराव हो सकता है; उचित जल निकासी सुनिश्चित करें.

मृदा स्वास्थ्य निगरानी

- मिट्टी की नमी और जल निकासी की नियमित रूप से निगरानी करें।
- जल का निक्षालन के माध्यम से पोषक तत्वों की हानि को कम करने के लिए नाइट्रोजन उर्वरक को विभाजित खुराक में प्रयोग करें।
- भारी वर्षा से पहले उर्वरक प्रयोग से बचें।
- मिट्टी में जैविक कार्बन में सुधार के लिए गोबर की खाद/ जैविक खाद और फसल अवशेषों को शामिल करें।
- मिट्टी परीक्षण के आधार पर असम और ओडिशा की अम्लीय मिट्टी में चूना लगाएं।
- पोषक तत्वों की कमी के लक्षणों पर गौर करें और तुरंत सुधारात्मक उपाय करें।

फसल प्रबंधन

जूट/ पटसन

- इष्टतम पौधों की संख्या बनाए रखने के लिए पूर्ण विरलन (Thinning) करें।
- CRIJAF नेल वीडर/सिंगल व्हील जूट वीडर का उपयोग करके निराई करें।
- वर्षा के बाद नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करें।
- 24-48 घंटों से अधिक पानी जमा होने से बचें।
- तना सड़न, पीला घुन, एन्थ्रेक्नोज, बालों वाली कैटरपिलर और सेमीलूपर के आने से अनुशंसित कीटनाशकों/कीटनाशकों का प्रयोग करें
- प्रकाश जाल स्थापित करें और एकीकृत कीट प्रबंधन प्रथाओं का पालन करें।

मेस्ता

- पर्याप्त मिट्टी की नमी वाले वर्षा आधारित ऊपरी क्षेत्रों में बुआई जारी रखें।
- अनुशंसित दूरी और जल निकासी बनाए रखें।
- समय पर अंतरसांस्कृतिक संचालन और निराई करें।
- पत्ती धब्बा, तना सड़न और रस चूसने वाले कीटों के आने से अनुशंसित कीटनाशकों/कीटनाशकों का प्रयोग करें।

रैमी

- पेड़ी निकलने/कटाई के बाद नाइट्रोजन उर्वरक को विभाजित खुराक में प्रयोग करें।
- खेत की खरपतवार-मुक्त स्थिति बनाए रखें।
- गुणवत्तापूर्ण रेशा के लिए परिपक्व पौधे की समय पर कटाई करें।
- लगातार वर्षा के दौरान कुशल जल निकासी सुनिश्चित करें।
- पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और मिलीबग के आने से अनुशंसित कीटनाशकों/कीटनाशकों का प्रयोग करें।

सिसल

- पौधों के आसपास के खरपतवारों को नियमित रूप से हटाएं।
- प्राथमिक और माध्यमिक नर्सरी की खरपतवार मुक्त स्थिति बनाए रखें।
- जड़ क्षेत्र के चारों ओर जैविक खाद लगाएं।
- भारी वर्षा के दौरान जल निकासी सुनिश्चित करें।
- रोगग्रस्त और सूखी पत्तियों को तुरंत हटा दें।

सनई

- प्रमाणित बीज एवं राइजोबियम बीज उपचार का प्रयोग कर बुवाई करें।
- पतलापन और जल्दी निराई-गुड़ाई करें।
- यदि सूखा रहता है तो सिंचाई करें।
- कैटरपिलर, तना छेदक और मुरझान के आने से अनुशंसित कीटनाशकों/कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- भारी बारिश के दौरान जल निकासी सुनिश्चित करें।

सिंचाई एवं जल निकासी प्रबंधन

- सक्रिय मानसून की स्थिति में आमतौर पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।
- भारी वर्षा के तुरंत बाद अतिरिक्त पानी निकाल दें।
- खेत के बांधों और जल निकासी चैनलों को मजबूत करें।

कीट और रोग निगरानी

- वर्षा के बाद सप्ताह में दो बार खेतों का निरीक्षण करें।
- अंधाधुंध कीटनाशकों के प्रयोग से बचें।
- कीड़ों की निगरानी के लिए फेरोमोन/लाइट ट्रैप का उपयोग करें।
- रोगग्रस्त पौधों और फसल के अवशेषों को खेत से हटा दें।